4

मृतकों की मध्य स्थिति

"जो कुकर्मी लटकाए गए थे, उन में से एक ने उस की निन्दा करके कहा; क्या तू मसीह नहीं? तो फिर अपने आप को और हमें बचा। इस पर दूसरे ने उसे डांटकर कहा, क्या तू परमेश्वर से भी नहीं डरता? तू भी तो वही दण्ड पा रहा है। और हम तो न्यायानुसार दण्ड पा रहे हैं, क्योंकि हम अपने कामों का ठीक फल पा रहे हैं; पर इस ने कोई अनुचित काम नहीं किया। तब उस ने कहा; हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना। उस ने उस से कहा, मैं तुझ से सच कहता हूं, कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा" (लूका 23:39-43)।

मृत्यु होने पर प्राण देह को छोड़ देता है। प्राण निकलने के बाद[1] मनुष्य देह में नहीं रहता (2 कुरिन्थियों 5:1-8)। पतरस ने लिखा है, "... जब तक मैं इस डेरे में हूं, तब तक तुम्हें सुधि दिला दिलाकर उभारता रहूं। क्योंकि यह जानता हूं, कि ... मेरे डेरे के गिराए जाने का समय शीघ्र आने वाला है" (2 पतरस 1:13, 14)। पतरस अपने प्राण की बात कर रहा था, जो मृत्यु होने पर आत्मा के साथ देह को छोड़कर आत्मिक संसार में प्रवेश करता है। वह अर्थात उसका भीतरी व्यक्ति प्राण उसकी देह को छोड़कर जाने वाला था। इससे हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि मृत्यु होने पर व्यक्ति अपनी देह को छोड़कर आत्मा में अन्य सभी देह रहित आत्माओं के साथ रहने के लिए चला जाता है।

प्रकाशितवाक्य में यूहन्ना ने मरे हुओं को वेदी के नीचे और फिर सिंहासनों पर दिखाया (प्रकाशितवाक्य 6:9; 20:4)। उसकी बात की कि उसने "उनके प्राणों को देखा" जो इस बात का संकेत देता है कि वह उन मरे हुओं की बात लिख रहा था जो देहों में नहीं थे। प्राण को देह को त्याग देने पर व्यक्ति पुनरुत्थान की प्रतीक्षा के लिए "मध्य स्थिति" में चला जाता है। ऐसी जगह, क्या वे आत्माएं सचेत हैं या अचेत? क्या वे अपनी स्थिति में कोई परिवर्तन कर सकती हैं या वे कहां पर हैं? क्या हम उनकी सहायता कर सकते हैं और क्या वे हमारी सहायता कर सकती हैं? क्या वे मृतकों के प्रायश्चित के स्थान पर जाती हैं, जहां वे अपने पापों के पर्याप्त अस्थाई दण्ड पाने तक रहते हैं और फिर स्वर्ग में प्रवेश कर जाते हैं? क्या उद्धार पाने का दूसरा अवसर है?

SHEOL (शियोल) = HADES (हेडिस)

पुराने नियम में सिखाया गया था कि मृतक शियोल (अधोलोक) में जाते हैं; नया नियम इसके समानान्तर शब्द हेडिस बताता है। इब्रानी शब्द *sheol* (शियोल) जो पुराने नियम में 65 बार आता है, का अनुवाद किंग जेम्स के अनुवाद में 31 बार "नरक," 31

बार "कब्र" और 3 बार "गड्ढा" हुआ है। *शियोल* का अनुवाद "नरक" करना भ्रमित करने वाला है। नरक अनन्तकाल की आग का स्थान है। अधोलोक वह स्थान है, जहां मृतक जाते हैं। याकूब ने कहा कि वह "अधोलोक" अर्थात शियोल में जाएगा (उत्पत्ति 37:35; KJV और NKJV में इसका अनुवाद "कब्र" हुआ है)। निश्चय ही, याकूब के कहने का अर्थ यह नहीं था कि वह क्लेश के जलते हुए संताप वाले स्थान में रहेगा। उसका अर्थ अवश्य यही होगा कि वह मृतकों के स्थान में जाएगा।

दुष्टों के अधोलोक (शियोल) में जाने का भय बताया गया है, जिस कारण कुछ लोग अधोलोक को वह स्थान मानते हैं, जहां *केवल* दुष्ट ही जाते हैं। शायद हम सब अधोलोक में जाएंगे (उत्पत्ति 37:35; यशायाह 14:9)। शायद दुष्टों के लिए अधोलोक (शियोल) की धमकी धर्मियों के लिए आशीष के रूप में सामान्य लम्बी आयु की आशीष (यहेजकेल 18:4, 9) के विपरीत उन्हें मिलने वाले मृत्यु के तुरन्त बाद दण्ड का संकेत ही है (भजन संहिता 9:17; 55:15; नीतिवचन 23:14)। यदि यह सच है, तो अधोलोक को वह स्थान माना जाना चाहिए जहां मृत्यु के समय दुष्ट और धर्मी सभी लोग जाते हैं।

पुराने नियम से उद्धृत करते हुए नये नियम की तरह सप्तति अनुवाद में[2] यूनानी शब्द *हेडिस* का इस्तेमाल शियोल (अधोलोक) के समानार्थक के रूप में किया गया है (भजन संहिता 16:10; प्रेरितों 2:27, 31)। यूनानी शब्द *हेडिस* जिसका अर्थ "छिपा हुआ" या "अदृश्य" (KJV में इसका अनुवाद "नरक" परन्तु अधिकतर अन्य अनुवादों में "पाताल" हुआ है), नये नियम में दस बार मिलता है। एक बार बिना ठोस हस्तलेखों के समर्थन के विभिन्नता के रूप में इसका अनुवाद "मृत्यु" (1 कुरिन्थियों 15:55) हुआ है। न तो *अधोलोक* और न ही *पाताल* का अनुवाद "नरक" होना चाहिए, जो आग की पीड़ा का स्थान है। "नरक" या अनन्तकाल की पीड़ा के लिए यूनानी शब्द *गेहन्ना* का इस्तेमाल किया जाता है।

HADES (या पाताल) कैसा है

धनी मनुष्य और लाज़र की कहानी बताते हुए यीशु ने हेडिस की एक स्पष्ट तस्वीर बताई (लूका 16:19-31)। इस वृत्तांत में बताई गई हर बात में यह संकेत है कि यीशु एक वास्तविक घटना की बात कर रहा था।

दृष्टांत बताते हुए, कई बार यीशु यह कह कर कि उसकी बात किसी और चीज़ "की तरह" थी उसके दृष्टांत होने का संकेत देता था (देखें मत्ती 7:26; 11:16; 13:31, 33, 44, 45, 47, 52)। अन्य मामलों में दृष्टांत बताते हुए यह संकेत देने के लिए कि वह केवल दृष्टांत ही बता रहा है, वह किसी तुलनात्मक शब्द का इस्तेमाल नहीं करता था; पर संदर्भ से पता चल जाता था कि यह दृष्टांत ही है (देखें लूका 10:30-37; 15:3-7, 8-10, 11-32)। यीशु के दृष्टांत हमेशा ऐसी घटनाओं पर आधारित होते थे, जो सम्भव थीं। उसने कभी ऐसी बात नहीं की, जो वास्तविकता के विपरीत हो अर्थात जो सच्ची न हो सकती हो, यदि धनी मनुष्य और लाज़र के बारे में कही गई उसकी बात को अपवाद मानें तो। इसी लिए

हमें लाज़र के वृत्तांत को एक वास्तविक घटना के रूप में या कम से कम हो सकने वाली घटनाओं के एक उदाहरण के रूप में मानना चाहिए।

यूनानी शब्द *tis* जिसका अनुवाद धनी मनुष्य और लाज़र को दर्शाने के लिए "एक" हुआ है (लूका 16:19, 20)। *Tis* का इस्तेमाल विशेष, ज्ञात लोगों के लिए किया जाता है। केवल लूका के लेखों के एक नमूने से ही पता चलता है कि ऐसा ही है (देखें लूका 1:5; 6:1; 7:2, 41; 8:2, 27; 9:57; 11:1, 27, 37; 12:16; 13:6, 31; 14:1, 2, 16; 15:11; 16:1)। यीशु दो लोगों की बात कर रहा था, जो वास्तविक थे। यदि उसकी मंशा यह न होती, तो वह दो लोगों की बात करते हुए *tis* (*टिस*) शब्द का इस्तेमाल न करता। नाम लेकर लाज़र का उल्लेख करना भी एक महत्वपूर्ण संकेत है कि यीशु एक वास्तविक व्यक्ति की बात कर रहा था। वास्तव में यही एकमात्र दृष्टांत है, जिसमें किसी के नाम का उल्लेख हुआ है।

इस प्रकार, इस कहानी की समीक्षा से हम पाताल से सम्बन्धित कुछ प्रश्नों के उत्तर ढूंढ़ सकते हैं।

(1) धर्मी हों या दुष्ट सब पाताल या अधोलोक में ही जाएंगे। धनी मनुष्य और लाज़र दोनों वहीं गए।
(2) दुष्ट लोग पीड़ा में हैं और दण्ड पाने वालों के लिए कोई राहत नहीं है।
(3) धर्मी लोग सांत्वना के स्थान में हैं।
(4) सब की पहचान वैसे ही है, और हर किसी को याद है कि पृथ्वी पर क्या हुआ था।
(5) सब अपने आस-पास से सचेत हैं।
(6) दुष्टों को धर्मियों से "बड़े गड्ढे" के द्वारा अलग किया गया है, और यह गड्ढा धर्मियों और दुष्टों को एक-दूसरे के पास जाने से रोकता है।
(7) सब एक-दूसरे से बातचीत कर सकते हैं।
(8) सब देहरहित संसार में एक-दूसरे को पहचानते हैं।
(9) पृथ्वी पर लोग अभी भी रह रहे हैं। धनी मनुष्य के भाई अभी भी पृथ्वी पर जीवित थे।
(10) कोई भी वापस आकर पृथ्वी पर रहने वालों के साथ बात नहीं कर सकता।

स्वर्गलोक

हेडिस को दो भागों में बांटा गया है (लूका 16:26)। एक भाग स्वर्गलोक (Paradise) है और दूसरा टारटरस है।

यीशु ने क्रूस पर अपने साथ मरने वाले डाकू को आश्वासन दिया था, "मैं तुझ से सच कहता हूं, कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा" (लूका 23:43)। "स्वर्गलोक" (यू.: *paradeisos*) का अर्थ "पार्क" अर्थात सुन्दरता और सांत्वना का स्थान है, जिसे स्वर्ग के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है (2 कुरिन्थियों 12:1-4; प्रकाशितवाक्य 2:7) या, जैसा कि इस मामले में है, वह स्थान जहां धर्मी मृतक जाते हैं। यीशु की देह तो कब्र में पड़ी थी (लूका 23:52, 53), पर उसकी आत्मा अधोलोक में गई थी (प्रेरितों 2:27, 31)। यीशु को मरने के

बाद स्वर्ग में उठाया नहीं गया था, जो कि मरियम मगदलीनी को कही गई उसकी बात से स्पष्ट है: ''मुझे मत छू क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया'' (यूहन्ना 20:17)। इससे हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि मरने पर यीशु और वह डाकू दोनों ही अधोलोक के उस भाग में जिसे स्वर्गलोक कहा जाता है, यानी विश्राम और सुन्दरता के स्थान में गए।

लूका 16:22 में ''अब्राहम की गोद'' को स्वर्गलोग के पर्याय के रूप में माना जाता है। मरने पर धर्मी लोग स्वर्गलोक में जाते हैं। ''अब्राहम की गोद'' से केवल लाज़र के लिए अब्राहम के प्रेम का ही संकेत मिलता है। नातान ने बताया कि किस प्रकार एक निर्धन अपनी गोद में एक मेमने को ले जाता था (2 शमूएल 12:3), जो मेमने के प्रति उसके प्रेम की सम्भाल को दिखाता है। जिस चेले से यीशु प्रेम रखता था वह उसकी गोद में, या सीने के पास था (यूहन्ना 13:23) जो उस चेले के लिए यीशु के प्रेम का संकेत था। यीशु को पिता की गोद में बताया गया है (यूहन्ना 1:18), जो यीशु के लिए परमेश्वर के प्रेम की अभिव्यक्ति है। धनी मनुष्य से अब्राहम ने वह प्रेम नहीं किया या उसे सम्मान नहीं दिया जिसकी बहुत से यहूदियों को उम्मीद होगी; लेकिन अब्राहम की स्वीकृति निर्धन लाज़र को मिली।

अंधेर कुण्ड या टारटरस

अधोलोक में एक ''बड़ा गड्ढा'' स्वर्गलोक को टारटरस से अलग करता है, जो पीड़ा और क्लेश का स्थान है। दुख की बात है कि यूनानी शब्द *tartaros* का अनुवाद KJV और NKJV में ''नरक'' हुआ है, जो नये नियम में केवल एक बार मिलता है: ''क्योंकि जब परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को, जिन्होंने पाप किया, नहीं छोड़ा, पर नरक में भेजकर अन्धेरे कुण्डों में डाल दिया, ताकि न्याय के दिन तक बन्दी रहें'' (2 पतरस 2:4)। दुष्ट स्वर्गदूत वहां होंगे, पर बाद में उन्हें ''अनन्त आग'' में भेजा जा सकता है, जहां उनके साथ अधर्मी लोग दण्ड पाएंगे (मत्ती 25:41)। आज्ञा न मानने वाले मृतकों की आत्माएं वहां बंदी हैं (1 परतस 3:19, 20)। नूह में (1 पतरस 1:11) अपने आत्मा के द्वारा, बोलकर यीशु ने (2 पतरस 2:5) नूह के समय के कुछ लोगों में प्रचार किया। क्योंकि उन्होंने उसके संदेश को ठुकरा दिया इसलिए उनकी आत्माएं अन्धेरे कुण्ड में बंदी हैं, जहां वे पतरस का दूसरा पत्र लिखे जाने के समय थीं। अधोलोक के इस भाग का वर्णन मूसा के गीत में किया गया है: ''क्योंकि मेरे कोप की आग भड़क उठी है, जो पाताल की तह तक जलती जाएगी'' (व्यवस्थाविवरण 32:22)। अन्धेरे कुण्ड या टारटरस, शियोल या अधोलाक का निम्न भाग है।

कुछ गलत धारणाएं

मृतकों की स्थिति के बारे में कई गलत धारणाएं पाई जाती हैं।

पहली, ''मृतकों की आत्मा प्राण रूप बदलकर अन्य मानवीय देहों, पशुओं में या शारीरिक जीवों में आ जाएगी।'' हम बार-बार पृथ्वी पर मरने के लिए नहीं आते। यह विचार इब्रानियों 9:27 जैसी बाइबल की शिक्षा के विपरीत है जहां लिखा है, ''मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है।'' मृतकों के सम्बन्ध में, यह

लिखा गया है, ''अब जो कुछ सूर्य के नीचे किया जाता है उस में सदा के लिए उनका और कोई भाग न होगा'' (सभोपदेशक 9:6)। हमें पृथ्वी पर केवल *एक* ही जीवन मिलता है उसके बाद फिर हम आत्मिक संसार में चले जाएंगे, जहां से पृथ्वी पर दोबारा रहने के लिए कभी वापस नहीं आएंगे।

एक और गलत धारणा है कि ''आत्मा या तो सो जाएगी या मृतकों के जी उठने तक उसका अस्तित्व नहीं रहेगा।'' ''सोना'' शब्द का इस्तेमाल यूहन्ना 11:11-13 और 1 थिस्सलुनीकियों 4:14, 15 में मृतकों के सम्बन्ध में ही किया गया है, परन्तु इसका इस्तेमाल केवल देह के प्रकट होने और उसकी स्थिति का वर्णन करने के लिए है। ''सोना'' एक रूपक है, जिसका इस्तेमाल इस आश्वासन के लिए किया जाता है कि देह की मृत्यु अन्त नहीं है, बल्कि मृत्यु के बाद भी जीवन जारी रहता है, जैसे जीने के लिए सोने वाला व्यक्ति होता है।

यह दावा करने के लिए कि मृतकों को कुछ पता नहीं होता क्योंकि वे सो रहे हैं या उनका अस्तित्व नहीं है, सभोपदेशक 9:5, 6 का इस्तेमाल करने वाले इस आयत का दुरुपयोग कर रहे हैं। लेखक केवल इस जीवन के साथ मृतकों के सम्बन्ध की बात कर रहा था। मृतकों को यह ज्ञान नहीं है कि यहां क्या हो रहा है और वे सांसारिक प्रतिफल नहीं पा सकते। उन्हें मालूम है कि जहां वे हैं वहां क्या हो रहा है और मृतकों के अदृश्य संसार की बातों में उनका भाग होगा (लूका 16:19-31)। उन्हें इस जीवन के बाद या तो प्रतिफल मिलेगा या दण्ड (2 कुरिन्थियों 5:10; मत्ती 25:46)।

तीसरी गलत धारणा है कि ''मुर्दे किसी माध्यम के द्वारा जीवित लोगों के साथ और जीवित लोग मरे हुओं के साथ बातचीत कर सकते हैं।'' यह अध्यात्मवाद या प्रेत विद्या है। बाइबल में जादू-टोना करने वालों की घोर निंदा की गई है (देखें निर्गमन 22:18; लैव्यव्यवस्था 19:26, 31; 20:6; व्यवस्थाविवरण 18:11; 2 राजा 21:6; 23:24; यशायाह 8:19, 20)। लाज़र को धनी मनुष्य के भाइयों से बात करने के लिए वापस आने की अनुमति नहीं दी गई थी (लूका 16:27-31)। मृतकों को इस बात का कोई ज्ञान नहीं है कि यहां क्या हो रहा है और पृथ्वी पर होने वाली किसी बात में उनका कोई भाग नहीं है।

एक और गलत धारणा है कि ''संतों'' या अन्य लोगों के पास ''मरे हुओं के लिए प्रार्थना करके, हमें सहायता मिल सकती है।'' यीशु हमारा सहायक है (इब्रानियों 4:15, 16) और एकमात्र मध्यस्थ है (1 तीमुथियुस 2:5), कोई और नहीं जो मर चुका हो। वह हमारे जैसा था, जिस कारण वह हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ सहानुभूति कर सकता है और आवश्यकता में हमारी सहायता कर सकता है (इब्रानियों 2:17, 18; 4:15, 16)।

एक और भी गलत अवधारणा है कि ''इस जीवन के बाद उद्धार का एक और अवसर दिया जाएगा।'' यीशु ने इस बात का संकेत दिया कि इस जीवन के बाद, दुष्टों और धर्मियों के बीच में एक बड़ा गड्ढा ठहराया गया है। कोई भी एक-दूसरे की ओर नहीं जा सकता है। हमारा न्याय देह में किए गए हमारे कामों के आधार पर होगा (2 कुरिन्थियों 5:10)। इस कारण हमारा भविष्य अपनी देहों को त्यागने के तुरन्त बाद मुहर कर दिया जाता है। अपने पापों में मरने वाले लोग यीशु के साथ नहीं हो सकते (यूहन्ना 8:21)। इसलिए, ''अभी

वह उद्धार का दिन है'' (2 कुरिन्थियों 6:2)।

परगेटरी (प्रायश्चित की अवस्था) की धारणा भी गलत है कि ''मृत्यु के बाद, आत्माएं न्याय के दिन तक के लिए प्रायश्चित की अवस्था में चली जाती हैं।'' इस शिक्षा के अनुसार पाप क्षमा होने के बावजूद पापी के लिए अपने पापों से सम्पूर्ण प्रतिफल पाने के लिए और स्वर्ग में जाने के योग्य होने के लिए अस्थाई दण्ड सहना आवश्यक है। इसमें विचार यह है कि यदि इस जीवन में पर्याप्त कष्ट नहीं सहा गया, तो पापी को प्रायश्चित की अवस्था में कष्ट सहना होगा। समय की लम्बाई और दण्ड का स्तर व्यक्ति के दोष के स्तर द्वारा ठहराया माना जाता है। सुकर्म, विभिन्न प्रकार के कार्यों में शामिल होना, और ''संतों'' तथा दूसरों की सहायता करना प्रायश्चित के स्थान में आत्मा के ठहरने को कम करने का उपाय माना जाता है।

परगेटरी की शिक्षा बाइबल के पुराने या नये नियम में कहीं नहीं मिलती, बल्कि यह अपोक्रिफा (अप्रामाणिक पुस्तक) की एक बात के आधार पर है, जो रोमन कैथोलिक बाइबल का एक भाग है और परमेश्वर की प्रेरणा से होने का दावा नहीं करती और रोमन कैथोलिकों के अलावा लगभग सब लोगों द्वारा उसके परमेश्वर की प्रेरणा से दिए होने को नकारा जाता है। उसमें लिखा है, ''इसलिए उसने प्रायश्चित के बलिदान का प्रबन्ध किया, जिससे मृतक अपने पाप से मुक्त हो जाएं'' (2 मक्काबियों 12:46)।[3] रॉबर्ट सी. ब्राडरिक ने परगेटरी को ''वह स्थिति और स्थान जहां पहले क्षमा किए गए पापों का अस्थाई दण्ड भुगतना पड़ता है, और अनुग्रह की स्थिति में मरने वाले व्यक्ति की आत्मा से क्षमा योग्य पाप जिनके लिए पश्चात्ताप नहीं किया गया, माफ़ कर दिए जाते हैं; शुद्ध करने और तैयारी का स्थान जहां आत्मा सीधी स्वर्ग में जाती है'' कहा है।[4] यह शिक्षा क्रूस पर यीशु के कष्ट सहने और मृत्यु की पर्याप्तता को दूर करके (1 पतरस 1:18-20) स्वर्ग में प्रवेश करने से पहले मानवीय गुण और मानवीय कष्ट की आवश्यकता के शुभ कर्मों को आवश्यक बना देती है, जो ऐसी शिक्षा है जिसका बाइबल खण्डन करती है (इफिसियों 2:8; तीतुस 3:5)। यह शिक्षा यीशु की शिक्षा कि अधोलोक के उस बड़े गड्ढे को पार नहीं किया जा सकता, के भी उलट है (लूका 16:22-26)।

सातवीं गलत धारणा यह है कि ''किसी मरे हुए की ओर से जीवित व्यक्ति को बपतिस्मा दिया जा सकता है,'' यह शिक्षा अधिकतर 1 कुरिन्थियों 15:29 के आधार पर बनी है, जो एक कठिन आयत है: ''नहीं तो जो लोग मरे हुओं के लिए बपतिस्मा लेते हैं वे क्या करेंगे? यदि मुर्दे जी उठते ही नहीं तो फिर क्यों उनके लिए बपतिस्मा लेते हैं?'' इस में पौलुस पुनरुत्थान के बारे में तर्क दे रहा था। वह बता रहा था कि किस प्रकार कुछ लोग बाद के जीवन में विश्वास रखते थे। यदि वह मरे हुओं के लिए बपतिस्मे की बात कर रहा था, तो वह ऐसा करने की अनुमति नहीं दे रहा था, बल्कि केवल मृत्यु के बाद के जीवन में उनके विश्वास की बात कर रहा था। अपने पापों में मरने वालों के लिए बाइबल कोई आशा नहीं देती, बल्कि संकेत देती है कि वे स्वर्ग में नहीं जा सकते (यूहन्ना 8:21)। पुन: हमें यह ध्यान देना चाहिए कि धर्मियों और दुष्टों के बीच के गड्ढे को पार नहीं किया जा सकता है।

1 कुरिन्थियों 15:29 की एक और व्याख्या दी गई है। ''मरे हुओं'' लोगों के बजाय मृत्यु की अवस्था को कहा गया हो सकता है। पौलुस ने ऐलान किया कि यीशु ''मरे हुओं में से जी

उठा'' (1 कुरिन्थियों 15:12), जिसका अर्थ है कि वह मृतकों में से जी उठा था। सम्बन्धकारक के साथ यूनानी शब्द *huper* के अनुवाद ''के लिए'' का अर्थ ''के कारण'' हो सकता है (प्रेरितों 9:16; फिलिप्पियों 1:29; 2 थिस्सलुनीकियों 1:5)। पौलुस यह कह रहा हो सकता है कि बहुत से मसीही लोगों ने मृत्यु के कारण, यानी मरे हुओं के जी उठने को ध्यान में रखते हुए मृत्यु की तैयारी के लिए बपतिस्मा लिया था। यदि वे जी नहीं उठते हैं, तो उनके बपतिस्मे का क्या लाभ होना था? इस आयत के सम्बन्ध में, डब्ल्यू. एच. टी. डाऊ. ने लिखा है,[5]

> इतिहास से हमें ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता कि आरम्भिक मसीही कलीसियाओं में ऐसा होता था। यूनानी शब्द *hyper* उस लक्ष्य को भी दिखाता है जिससे व्यक्ति किसी विशेष कार्य करने के लिए प्रेरित हो सकता है। इस मामले में लक्ष्य को मृतकों के द्वारा अर्थात उनके जी उठने की बात से समझाया गया है। संदर्भ से इसका अर्थ पता चलता है: यदि किसी ने यह सोच कर बपतिसमा लेने की इच्छा की है कि मरे हुए लोग न्याय के दिन जी उठेंगे, और मृतक जी नहीं उठते तो उसका बपतिस्मा व्यर्थ है।

एक और गलत धारणा है कि ''मर चुके लोग अपने प्रियजनों को देख रहे हैं कि वे क्या करते हैं।'' कुछ लोग इस बात से डरते हैं कि उनके आचरण से उनके बिछड़े हुए प्रियजनों को दुख या आश्चर्य हो सकता है। इस कारण, वे उनके साथ बात करने और उनकी इच्छा को पूरी करने की कोशिश करते हैं। परन्तु पृथ्वी पर क्या हो रहा है, मरने वालों को इसका कोई ज्ञान नहीं है।

एक अन्तिम गलत धारणा है कि न्याय की कोई आवश्यकता नहीं होगी। तर्क दिया जाता है कि ''यदि दुष्ट और धर्मी मृतक पहले ही अधोलोक में एक-दूसरे से अलग हैं, तो न्याय के दिन की आवश्यकता ही नहीं है।'' यीशु को पहले से मालूम था कि उसके लोग कौन हैं (यूहन्ना 10:14, 27; 2 तीमुथियुस 2:19)। न्याय के दिन यीशु को कोई आश्चर्य नहीं होगा यदि हम स्वर्ग में या नरक में जाएं। उस समय यीशु हमारी बात ही दोहराएगा और फिर हमारे साथ हमारे जीवन में किए गए कामों को खोलेगा (मत्ती 25:31-46)।

सारांश

मरे हुए लोग अब देह हीन आत्माएं हैं जो अधोलोक में अर्थात स्वर्गलोक या अंधेरे कुण्ड में प्रतीक्षा कर रही हैं। उनके बीच में एक बड़ा गड्ढा ठहराया गया है ताकि मृतकों के पुनरुत्थान तक वे वहीं रहें। अभी तक वे न तो स्वर्ग में ऊपर उठाए गए हैं (प्रेरितों 2:34), न ही नरक में नीचे भेजे गए हैं। आइए हम मृत्यु और मृतकों की इस मध्यस्थिति में जाने की तैयारी करें, जब कि हमारे पास अभी समय है (2 कुरिन्थियों 6:2)।

हेडिस (शियोल)

टिप्पणियां

[1]उत्पत्ति 35:18 के अनुसार मृत्यु के समय प्राण देह से अलग हो जाता है; वैसे ही आत्मा भी, जैसा कि सभोपदेशक 12:7 और याकूब 2:26 में दिखाया गया है। और जानकारी के लिए ‘‘देह, प्राण और आत्मा’’ पाठ देखें। [2]सप्तति अनुवाद पुराने नियम के यूनानी अनुवाद को कहा जाता है, जो 300–200 ई.पू. के लगभग सिकन्द्रिया, मिस्र में बहत्तर विद्वानों द्वारा तैयार किया गया था। [3]मक्काबियों की दो अप्रामाणिक पुस्तकों में 166–40 ई.पू. में स्वतन्त्रता के लिए यहूदी संघर्ष का इतिहास है। [4]रोबर्ट सी. ब्राडरिक, ‘‘परगेटरी,’’ *कंसाइज़ कैथोलिक डिक्शनरी* (सेंट पॉल, मिनेसोटा.: कैटेकैटिकल गिल्ड एजूकेशनल सोसायटी, 1943), 143. [5]डब्ल्यू. एच. टी. डाऊ, ‘‘बैपटिज़्म,’’ *द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इंसाइक्लोपीडिया,* अंक 1, सं. जी. डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन.: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1979), 426.